इंस्टीट्यूट के निदेशक एकता शुक्ला ने सभी का धन्यवाद दिया।

नए तरीके की विदेश नीति बनानी होगी

संगोष्ठी

लखनऊ | कार्यालय संवाददाता

सैन्य ताकत, आर्थिक ताकत, सांस्कृतिक विरासत और संगीत को दरकिनार कर हम किसी भी विदेश नीति को आगे नहीं बढ़ा सकते। भारत की अपनी विशेष व्यवस्था है। दूसरे की आलोचना करने से अच्छा है कि अपनी कमी और वैश्विक विश्व के बारे में सोचना चाहिए। इसमें सिविल सोसायटी को अपना योगदान देना ही पड़ेगा। यह विचार जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अश्विनी कुमार महापात्र ने व्यक्त किए।

रविवार को बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय में राजनीति विभाग द्वारा एक दिवसीय संगोष्ठी विश्व मामलों की भारतीय परिषद (आईसीडब्ल्यूए) नई दिल्ली ने आयोजित की थी।

इस संगोष्ठी का विषय 'वैश्विक विश्व में भारत की विदेश नीति और इसके समक्ष चुनौतियां और अवसर' था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गिरिजेश पंत ने अपने संबोधन में कहा कि वैश्विक विश्व में हम प्रवेश कर चुके हैं। तो इसके लिए नए तरीके से अपनी विदेश नीति पर विचार करके निर्माण लक्ष्य बनाने चाहिए।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अश्विनी कुमार महापात्र ने कहा कि जो देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू को कांग्रेस का पर्यायवाची बताते हैं वह गलत है। क्योंकि कांग्रेस एक मूवमेंट था जिसके साथ लोगों ने आजादी की लड़ाई लड़ी थी। उन्होंने विदेश नीति में राष्ट्रीयता को जोड़ते हुए कहा कि प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेशनल हाइवे की योजना सामाजिक स्तर पर असर डाला था। इस बात को साफ करते हुए उन्होंने कहा कि जब तक एक गांव से दूसरे गांव में जाने के रास्ते नहीं थे तो अपने ही देश को लोग परदेश का नाम देते थे।

डॉ. प्रीति चौधरी ने कहा कि विदेश नीति का मतलब पड़ोसी देशों से सुरक्षा ही नहीं बल्कि आर्थिक सुरक्षा और महिला सुरक्षा भी इसमें शामिल है। उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि फलस्तीन देश के मुद्दों से सहमत होने के बावजूद इजरायल का विरोध नहीं कर सकते। जैसा कि विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने कहा कि हम राष्ट्रीय हितों की अनदेखी नहीं कर सकते।